बढ़ती संख्या के चलते और अपनी जमीन को अपने अधिकार से निकलता देख उनके पास विदेशियों से हाथ मिलाने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था । ग्रेट अण्डमानी, आदिम जनजाति का पहला ऐसा कबीला था, जो अंग्रेजों का मित्र बना । उसके बाद मैत्री सम्पर्क के चलते ओंगी, जारवा और मंगोलाई नस्ल के शोम्पेनों ने भी बाहरी दुनिया की ओर अपने कदम बढ़ा दिए ।

सदियों से जंगल की दुनिया में बसेरा करते और आदिकालीन सभ्यता में सांस लेते आए इन आदिम जनजाति कबीले के लोगों के सामने अब एक नई दुनिया है । अपनी ही धरती का बदला हुआ परिवेश है, आधुनिकता में ढलता उसका रूप है । अब जब इन लोगों ने हमारी ओर मैत्री भाव से अपने कदम बढ़ा ही दिए हैं और हमने भी अपनी दुनिया में उनका स्वागत किया है, तो अल्पसंख्यक इन आदिम जनजाति के कबीले के लोगों की सुरक्षा और कल्याण की जिम्मेदारी भी बहुसंख्यक होने के नाते हमारी ही बनती है । ये देखते हुए अण्डमान और निकोबार प्रशासन द्वारा उन्नीस सौ छिहत्तर में अण्डमान आदिम जनजाति विकास समिति की स्थापना की गई । द्वीपों के प्रशासक इसका अध्यक्ष, मुख्य आयुक्त को इसका उपाध्यक्ष और इसकी कार्यकारी परिषद में पन्द्रह सदस्यों के अलावा एक दानिक्स अधिकारी को कार्यकारी सचिव के रूप में नियुक्त किया गया । अगस्त, दो हजार सात से इससमिति में नियमित कार्यकारी सचिव की नियुक्ति कर दी गई । जिसके बाद से इसके कार्यों में और तेजी आई है ।

अब तक हमारी ओर मैत्री भाव से बढ़ने वाले आदिम जनजातियों का निवास चूंकि अलग–अलग क्षेत्रों में रहा है। अतः उनके बीच बोली के अलावा स्वभाव, व्यवहार और जीवनशैली आदि में अंतर आना स्वाभाविक है –

1. ग्रेट अंडमानी :– अंग्रेजों के समय से ही बाहरी दुनिया वालों की ओर से मैत्री का कदम बढ़ाने वाले इस कबीले के लोगों को आजादी के बाद उन्नीस सौ